विनीता कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
डा० एल० के० वी० डी० कॉलेज ताजपुर

बी० ए० I

NRB

रश्मिरथी

कथावस्तु

चतुर्थ सर्ग

पाण्डवों को बराबर यह भय लगा था कि जब तक कर्ण प्रकृतिप्रदत्त कान्चन कवच और कुण्डल से सुरक्षित है तब तक युद्ध में उसे कोई मार नहीं सकेगा। इसलिए भगवान ने अर्जुन के देव-पिता इन्द्र से कहा कि किसी प्रकार कर्ण के शरीर से कवच-कुण्डल अलग कर दो। किन्तु, इन्द्र यह काम कैसे करता? निदान उसने कर्ण की उदारता को अपने आक्रमण का माध्यम बनाया और उसके पुण्य के द्वार पर ही उसे लूट लिया।

कर्ण अपने समय का अप्रतिम दानवीर था। वह नित्य प्रति एक पहर तक सूर्य की पूजा करता था और उस समय याचक उससे जो माँगते, कर्ण खुशी-खुशी दे देता था। इन्द्र स्थिति का लाभ उठाकर उससे कवच और कुण्डल का दान माँगने आया। सूर्य उसके पूर्व कर्ण को सावधान कर चुके थे कि आज इन्द्र ब्राह्मण का रूप धरकर तुमसे कवच-कुण्डल माँगने आयेगा, तुम देना नहीं। किन्तु इस चेतावनी का कोई परिणाम नहीं निकला। इन्द्र जब भिक्षुक ब्राह्मण का वेश बनाकर कर्ण के सामने आया और उससे कवच और कुण्डल की याचना की, कर्ण 'नाहीं' न कर सका और सारे षड्यंत्र से अवगत होते हुए भी उसने कवच-कुण्डल के रूप में अपनी विजय तथा अपने जीवन का दान कर दिया। यह कर्ण के जीवन का सबसे बड़ा दान था।

अपनी लज्जा छिपाने को इन्द्र ने भी कर्ण को एकघ्नी नामक अस्त्र दिया और कहा कि जिस किसी व्यक्ति पर तुम इसे चलाओगे, वह अवश्य मारा जायेगा। किन्तु एक बार से अधिक तुम इसे नहीं चला सकोगे।

Scanned with CamScanner

यही अमोघ अस्त्र कर्ण ने दुर्योधन के हठ के कारण घटोत्कच पर चलाया। घटोत्कच तो मर गया, किन्तु एकघ्नी वापस इन्द्र के पास चली गयी।

विनीता कुमारी
22-04-2020